* प्रथम अध्याय *

: प्रथम अध्याय :

धर्मवीर भारती : जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय

धर्मवीर भारती हिंदी के जाने-माने लेखक हैं। धर्मवीर भारतीजी ने हिन्दी साहित्य के सभी विधाओं में सफलता पायी हैं। भारती रोमॅन्टिक प्रकृति के व्यक्ति थे। उनकी लेखनी जिस विषय एवं विधा पर चली है वहाँ भारतीजी का व्यक्तित्व निखर आया है। धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य बहुत कम है लेकिन जो लिखा है, वह बहुत मौलिक है। उन्होंने सभी विधाओं में सफलता पायी है। धर्मवीर भारती एक प्रसिद्ध कथाकार, कवि, नाटककार, निबन्धकार और पत्रकार थे। धर्मवीर भारतीजी ने साहित्य निर्मिती के साथ-साथ मानवकल्याण सम्बन्धी अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया हैं।

धर्मवीर भारती एक सफल साहित्यकार है। साहित्य की प्रत्येक रचना में रचनाकार के व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रभाव रहता है। इसलिए रचनाओं को समझ लेने के लिए रचनाकार का व्यक्तित्व देखना आवश्यक है।

१. धर्मवीर भारती : जीवन परिचय

<u>जन्म एवं बचपन</u> :-

डा.धर्मवीर भारतीजी का जन्म इलाहाबाद के अत्तरसुइया मुहल्ले में हुआ है। उनकी जन्म तिथि २४ दिसम्बर, १९२६ ई. है। उनका जन्म क्रिसमस पर्व के दिन हुआ था। डा.पुष्पा वास्कर के अनुसार -

"जिस घर में भारती का जन्म हुआ वह आज ४२८,अंतरसुइया के नाम से जाना जाता है और संकरी गलियोंवाले पुराने इलाहाबाद की एक संकरी गली में है। आज यहाँ "सिंह चिकित्सालय" का बोर्ड लगा है। इस मकान में डॉ.आर.एस.सिंह रहते हैं। इसी गली की अंतिम छोर पर भारती के मामा श्री अभयकृष्ण जौहरी का मकान है।"[१]

धर्मवीर भारती को बचपन में "बच्चन" नाम से बुलाया जाता था। धर्मवीर भारती का पहला नाम "धर्मवीर वर्मा" था। हाईस्कूल के दिनों के समय धर्मवीरजी ने अपने

नाम के आगे "वर्मा" के बदले "भारतीय" लगाना प्रारम्भ किया था। राष्ट्रीय आंदोलन के उस दौर में यह धर्मवीर की राष्ट्रीय भावना का ही द्योतक था। आगे चलकर यही "भारतीय" "भारती" में रूपांतरित हो गया। बचपन में मेलों-ठेलों आदि का आनंद उठाने के लिए उन्हें पड़ोस की जीजी का आसरा लेना पड़ता था। वे जीजी के लाड़ले थे। वे जीजी के बारे में कहते हैं - "उनके ठाकुरजी के लिए स्कूल के अहाते से कनेर और मधुमालती के फूल लाने से ले कर दोपहर को चिल्ला कर राधेश्याम को रामायण गाना मेरा रोज का कार्यक्रम था। फलस्वरूप हर ध्ठ पर छोटी-छोटी कुल्हियों में भुने चने, मकई, मटर भरने में जन्माष्टमी पर पँजीरी, पंचामृत बनाने में और कातिक में मेले से साल भर की खरीद फरोख्त करने में मैं उनका सलाहकार और छोटा सिपाही था।"[२]

माता-पिता :-

धर्मवीर भारती के पिता का नाम चिरंजीवलाल वर्मा था। धर्मवीर भारती का जमींदार घराने से तालुख दिखायी देता है। उनके दादाजी शाहजहाँपुर के निकट खुदागंज कस्बे की जमींदारी छोड़कर चले गये तत्पश्चात रूड़की में आकर उन्होंने ओवरसियरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ दिन वर्मा में रहकर उन्होंने सरकारी नौकरी और ठेकेदारी की। वहाँ से लौटकर वे पहले मिर्जापुर और बाद में स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगे। इलाहाबाद का मकान बेचकर धर्मवीर भारती बम्बई आ बसे।

धर्मवीर भारती के माता का नाम चंदादेवी था। भारती जी की माता आर्यसमाजी थी। - "माँ ने भारती के जीवन पर आर्य समाजी संस्कार ड़ालने का प्रयत्न अवश्य ही किया होगा। भारती का "धर्मवीर" नाम इस ओर निश्चित रूप से संकेत करता है। भारती की माँ को मेलों-ठेलों आदि में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी धारणा थी कि मेलों-ठेलों आदि ने देश का नाश किया है।"[३] इतना निश्चित है कि माँ की ओर से भारती को थोड़े बहुत आर्यसमाजी संस्कार मिले। भारती जी की माँ ने अपने पुत्र को पश्चिमी संस्कारों से बचाने का प्रयास किया है। यह माता का बर्ताव भारती जी को बिल्कुल पसन्द नहीं था। भारतीद्वारा अपने साहित्य में कहीं भी अपनी माता का स्मरण दिखायी नहीं देता है।

<u>शिक्षा एवं जीविकोपार्जन</u> :-

धर्मवीर भारती की स्कूली शिक्षा डी.ए.वी.हाइस्कुल में प्रारंभ हुई। स्कुली शिक्षा लेते समय भारती के जीवन में अनेक संकट आये। भारती जी आठवीं कक्षा में थे तब उनके पिताजी-चिरंजीवलाल वर्मा का देहांत हुआ। इस घटना ने मध्यवर्गीय भारती को निम्नमध्यवर्ग के स्तर पर उतार दिया। इसके बाद उनको अपना जीवन गरीबी की दारूण परिस्थितियों में बिताना पड़ा। इन परिस्थितियों में उनकी पढ़ाई जारी रखने का, और उनको सँभालने का काम उनके मामा अभयकृष्ण जौहरी ने किया। वे इलाहाबाद में उनके ही मुहल्ले में रहते थे। मामाजी की प्रेरणा से इन्होंने सन १९४२ में कायस्थ पाठशाला - "इण्टर कॉलेज" - में इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसी समय सन् १९४२ का "भारत छोड़ो" आंदोलन चल रहा था, उसमें सक्रीय भाग लेने के कारण इन्हें एक वर्ष के लिए अपना अध्ययन कार्य स्थगित करना पड़ा था। सन् १९४३ में ये प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो गये :- "सन् १९४५ में बी.ए. की परीक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की थी। बी.ए. की परीक्षा में उन्हें हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के कारण "चिंतामणि घोष पदक" दिया गया था।"[४] आर्थिक विषमता के कारण प्रारंभ से ही भारती को स्वावलंबी बनना पड़ा। बी.ए.की पढ़ाई के दौरान वे टयुशनें करते थे। एम.ए. में पढ़ाई करते वक्त "अभ्युदय" नामक दैनिक पत्र की पत्रकारिता को अपनाया ताकि पढ़ाई का खर्च निकाल सके। एम.ए. में पढ़ते समय भारती जी ने अपना "मुर्दों का गाँव" कहानी संग्रह प्रकाशित किया। सन् १९४७ में इन्होंने एम.ए.हिंदी की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। सन् १९४८ में लीड़र प्रेस से प्रकाशित पं.इलाचंद्र जोशी के पत्र "संगम" नामक साप्ताहिक में वे सह-संपादक के रूप में कार्य करते रहें। डा.धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में इन्होंने "सिद्ध साहित्य" पर शोध कार्य प्रारंभ किया। सन् १९०५ ई. को शोध कार्य पूरा करके पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। तदुपरांत वे प्रयाग-विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक बने। सन् १९६० तक वे अध्यापन कार्य में संलग्न रहें; पश्चात "धर्मयुग" के संपादक होकर बम्बई आ गये तथा वहाँ अंत तक प्रतिष्ठित पत्रकार एवं संपादक के रूप में कार्यरत रहे।

परिवार :-

भारतीजी को पहले प्यार में असफलता मिली। उसके बाद उनका प्रेम "कान्ता कोहली" नामक पंजाबी लड़की के साथ चला। वह लड़की "टाईपिस्ट" का काम करती थी। भारती उससे विवाह करना चाहते थे। पहले कान्ता कोहली के पिताजी की अनुमती विवाह के लिए नहीं मिली थी। आगे चलकर अपनी बेटी के भुख हड़ताल और जिद के कारण उन्हें सम्मति देनी ही पड़ी। विवाह के बाद कान्ताजी को एक बेटी हुओ। लेकिन थोडे ही दिनों के पश्चात पति-पत्नी के बीच संघर्ष के कारण इन दोनों के सम्बन्ध में विच्छेद हो गया। कुछ दिनों के पश्चात भारती के जीवन में दूसरी नारी ने प्रवेश किया, जिसका नाम था पुष्पा शर्मा। दूसरा विवाह भारतीजी ने पुष्पाजी के साथ किया। भारतीजी ने अपने पहले पत्नी की लड़की को अपने पास रख लिया। उनकी पहली पत्नी ने भी दूसरी शादी की है, उसका वर्तमान नाम "कांता पंत" है। धर्मवीर भारती को पुष्पा भारती ने अंत तक सहारा दिया। अनके संतान तीन हैं - पारमिता, किंशकु तथा प्रज्ञा। स्थायी रूप से उनका परिवार मुंबई में स्थित है।

मृत्यु :-

हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार डा.धर्मवीर भारती का ४ सितंबर,१९९७ के सुबह करीब छह बजे हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया। मृत्युसमय वे ७१ वर्ष के थे। भारतीजी का बेटा "किशंकु भारती" अमरीका में बस गया है। इतनी जल्दी उनका मुम्बई पहुँचना असंभव ही था। इसलिए भारती जी के अंतिम संस्कार उनकी बेटी प्रज्ञा ने पूर्ण किये। उनकी अंतिम यात्रा में महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल हुए थे।

अपने शोकसंदेश में राष्ट्रपति के.आर.नारायण ने डा.भारती के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। नवभारत टाईम्स के अनुसार उन्होंने अपने शोकसंदेश में कहा कि - "डा.भारती ने हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन कर साहित्य जगत में अपना अलग स्थान बनाया है।" प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल ने भी अपना शोक व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री मनोहर जोशी ने कहा कि - "धर्मयुग" के माध्यम से अनेक युवा लेखकों को भारतीजी ने साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया है। उनके निधन से साहित्य जगत ने महान साहित्यकार को खो दिया है। यह स्पष्ट होता है कि भारतीजी का जीवन काफी संघर्षमय दिखायी देता है फिर भी इन परिस्थितियों का सामना उनके रोमॅन्टिक व्यक्तित्व ने किया है। इस तरह उनका जीवन काफी दुःख और संघर्ष में बीता।

व्यक्तित्व :-

धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व के निर्माण में जहाँ एक ओर उनकी माता के आर्य समाजी संस्कारों एवं डा.धीरेंद्र वर्मा के निर्भिक चिंतन का योगदान है, वही दूसरी ओर इलाहाबाद के अत्तरसुइया मुहल्ले के मध्यनिम्न वर्गीय जीवन की पीड़ाओं ने भी यथेष्ट पूँजी उन्हें दी है। इसी पूँजी के बलपर वे कथासृजन को यथार्थवादी धरातल पर ले जा सके। बचपन में थोड़ी समझ आ जाने के बाद भारती के बालक मन पर ईसा मसीह का प्रभाव पड़ा। सन् १९४२ के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में भाग लेने की वजह से भारती जी की पढ़ाई एक साल के लिए रूक गयी थी। धर्मवीर भारती जी मार्क्सवादी चिंतन के उपासक थे। इस मार्क्सवाद के बारे में लेखक स्वयं कहते हैं - "मुझे मार्क्सवाद शब्दजाल के पीछे भी असंतोष, अहंवाद और गुटबन्दी दिख पड़ी है उसकी ओर साहस से स्पष्ट निर्देश करना मैं अनिवार्य समझता हूँ क्योंकि ये तत्त्व हमारे जीवन और हमारी संस्कृति की स्वस्थ प्रगति में खतरे पैदा करते हैं। मैं जानता हूँ कि जो मार्क्सवादी अपने व्यक्तित्व में सामाजिक तथा मार्क्सवाद की पहली शर्त ऑब्जेक्टिविटी विकसित कर चुके हैं, वे मेरी बात समझेंगे और इतना मेरे सन्तोष के लिए यथेष्ट है।"[५] मार्क्सवाद ने उन्हें जिन्दगी की परिस्थितियों को ऐतिहासिक तारतम्य समझने की दृष्टि दी। भारतीजी सुभाषचन्द्र बोस से अत्यधिक प्रभावित थे। विषमता के कारण भारती को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी बनना पड़ा। भारती के व्यक्तित्वपर छायावादी भावधारा का प्रभाव दूर तक है। भारती के व्यक्तित्व के बारे में चंद्रभानु सोनवणे कहते हैं - "व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया को सिद्धान्ततः स्वीकार करते हुए भी हम कह सकते हैं कि भारती अतीत की गलियों में बार बार भटकते हुए दिख पड़ते है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे विशिष्ट गली के बंद होने के कारण उसमें जब तब अपने

जाने या अनजाने में पहुँच कर गतिरोध का शिकार बन जाते हैं। इस बंद गली का आखिरी मकान प्रेमभाव का है। "[६]

भारतीजी स्वभाव से संकोची और कल्पनाप्रिय व्यक्ति थे। वे तन से कमजोर और मन से रोमँटिक थे। हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे। भारतीजी मधुर स्वभाव के व्यक्ति थे। उनका आचरण-व्यवहार मिलनसार था। भारतीजी आस्थावान, प्रतिभावान, क्षमतापूर्ण, परिश्रमशील थे। धर्मवीर भारतीजी जिस समाज में, जिस गली में रहते थे, उसके अंग-प्रत्यंग से परिचित थे। नियम से जल्दी उठना, अध्ययन करना, मिलनेवालों से दिल खोलकर बाते करना उन्हें अच्छा लगता था। बालक से लेकर वृद्ध तक मिलकर बातें करने का एक उनके स्वभाव का अच्छा पहलु था। बाते करते वक्त वे आस-पास के पूरे वातावरण को काव्यमय बनाते थे।

उनकी पसंद का रंग नीला था। उनका प्रिय गीत था - "ये रातें, ये मौसम, ये हँसना, इन्हें ना भूलाना, हमें भूल जाना।", उनकी प्यारी गझल थी - "दो गज जमीं भी न मिली कुचा-ए-यार में" भारतीजी को शहरों में इलाहाबाद शहर बेहद पसंद था। स्वाभाविक भी है क्योंकि उनकी बचपन की और जवानी की बहुतसी यादें उससे जुड़ी हुई थी। उन्हें टहलने की बिमारी सी थी। साथ ही उन्हें सोडा वॉटर पीने की आदत थी।

प्रेम और काम के संघर्ष और द्वैत ने भारती के व्यक्तित्व को कुछ अंशों में कुंठित किया था। इसी कारण उनके व्यक्तित्व में अनेक परतें छिपी हुई दिखायी देती हैं।

देशांतर परिभ्रमण और प्राप्त सम्मान :-

भारतीजी को बचपन से अज्ञात दिशाओं का परिभ्रमण करने का शौक था और उन्हें अनेक देश-विदेश की यात्रा करने का अवसर भी मिला है। सन् १९६१ में वे कॉमनवेल्थ रिलेशन्स कमिटी के आमंत्रण पर प्रथमतः इग्लैंड और युरोप की यात्रापर गये। १९६२ में जर्मनी गये। सन् १९६६ में मुक्तवाहिनी के सहयोग से बांग्लादेश की गुप्त यात्रा सितम्बर में की और दिसम्बर में भारतीय स्थलसेना के साथ युद्ध के वास्तविक मोर्चे का रोमांचक

अनुभव प्राप्त किया, इसके दर्शन हमें "रिपोर्ताज", "मुक्तक्षेत्रे", "युद्धक्षेत्रे" नामक किताबों में होते हैं। भारती को मई, १९७४ में मारिशस की यात्रा का अवसर मिला। सन् १९७८ में जनता सरकारद्वारा उन्हें कम्युनिस्ट : चीन जाने का अवसर मिला।

उन्होंने साहित्य की जो सेवा की है, उसके उपलक्ष्य में उन्हें सन् १९६७ में संगीत-नाटक अकादमी का सदस्य किया गया था। इसके बाद सन् १९७२ में उन्हें भारत सरकारने "पद्मश्री" के बहुमान से सत्कृत भी किया है।

अंत में हम कह सकते हैं कि भारतीजी रोमानी प्रवृत्ति के साथ साथ संकोची और अंतर्मुखी स्वभाववाले व्यक्ति थे। प्रेम और काम के संघर्ष ने इनके व्यक्तित्व को कुछ अंशों में कुण्ठित किया था। भारतीजी का यह व्यक्तित्व उन्होंने लिखी हुई समस्त रचनाओं में दिखायी देता है।

२. धर्मवीर भारती : साहित्य परिचय

डा.धर्मवीर भारती एक सफल साहित्यकार हैं। उन्होंने जितनी ख्याति उपन्यासों के क्षेत्र में प्राप्त की उतनीही कहानियों के और कविताओं के क्षेत्र में भी। धर्मवीर भारतीजी ने सभी विधाओं में साहित्य रचना की हैं। "अंधायुग" जैसी रचनाओं का निर्माण कर उन्होंने नवीनता को भी प्रस्तुत किया है। हर विधा में जो साहित्य धर्मवीर भारती ने लिखा उसमें कौशल्य भी प्राप्त किया है। ऐसे साहित्यकार के कृतित्व पर प्रकाश ड़ालना जरूरी है। विधानुसार उनका कृतित्व निम्नप्रकार हैं -

(क) कवि भारती

(१) दूसरा सप्तक :-

"दूसरा सप्तक" में "थके हुए कलाकार" से लेकर "कविता की मौत" तक बारह कविताएँ संकलित हैं। इसमें संग्राहित अधिकांश कविताएँ युवक कवि के हृदय में व्याप्त रूमानी भावों को ही रूपायित करती हैं। साथ ही कुछ रचनाओं में प्रेम की मादकता की सुक्ष्मता व्यंजित हुओ है। उनकी ये कविताएँ कुछ सामाजिक चेतना, विद्रोह और आक्रोश का रूप ग्रहण करती हुओ प्रतीत होती हैं। इस प्रकार "दूसरा सप्तक" की कविताओं में

भारती के व्यक्तित्व का पर्याप्त रूप दिखायी देता है।

(२) ठण्डा लोहा :-

यह काव्य संग्रह १९५२ में प्रकाशित हुआ है। यह भारतीजी का पहला "काव्यसंग्रह" है। यह एक स्फुट काव्य है। इस कवितासंग्रह में कवि भारतीजी ने ज्यादहतर अपनी आंतरिक पीड़ाओं का चित्रण किया है। अधिकांश कविताएँ रोमन्टिक स्वर की हैं। इस संग्रह की सिर्फ ९ कविताओं में जनवादी भूमिका दिखायी देती है।

(३) सात वर्ष गीत :-

यह भारतीजी का दूसरा काव्यसंग्रह १९५९ में प्रकाशित हुआ है। इस काव्यसंग्रह में ५९ कविताएँ हैं। इसमें प्रणय भावना से सम्बन्धित कविताएँ सबसे अधिक हैं। इसमें १९५२ से १९५९ ई. तक की कविताओं का संकलन किया है। इस संकलन की कविताओं में आस्था एवं अनास्था के रूप, स्वतंत्रता, स्वाभिमान एवं देशप्रेम की महत्ता आदि का बखान किया है। प्रणय की इन कविताओं में संयोग-श्रृंगार की कविताओं का अभाव-सा है। यह भी एक स्फुट कविताओं का संग्रह है।

(४) कनुप्रिया :-

यह एक प्रबंध के रूप में कविता प्रस्तुत की है। भारती का यह प्रबन्ध काव्य १९५९ में प्रकाशित हुआ है। "कनुप्रिया" पूर्णतः भावपरक काव्य है। "कनुप्रिया" पाकर खो देने की व्यथाभरी प्रेमकथा है। "कनुप्रिया" में रोमांटिक प्रेम है और अपनी रोमांटिक प्रेम संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए एक पात्र को राधा के माध्यम से व्यक्त किया है। "कनुप्रिया" की राधा के बारे में चंद्रभानु सोनवणे जी कहते हैं - "हमे राधा का आधुनिक रूप भी "कनुप्रिया" में दिख पड़ता है, "कनुप्रिया" की मूल वृत्ति संशय या जिज्ञासा नहीं है, तथापि आधुनिक काल की संशय वृत्ति का उस पर प्रभाव अवश्य है।"[७] "कनुप्रिया" में कवि ने राधा एवं कृष्ण के प्रणय के मनस्थितियों की विविधता प्रस्तुत की है।

(५) सपना अभी भी :-

धर्मवीर भारती का यह काव्यसंग्रह १९९४ में प्रकाशित हुआ है। इस काव्यसंग्रह में १९६९

से १९९३ तक की रचनाएँ संग्रहित हैं। इस कविता संग्रह की कविताओं में विक्षोभ, आक्रोश, जिजीविषा का स्वर सुनाई पड़ता है। भारती जी की कविताओं पर सामान्यतः समय का दबाव बहुत कम रहा है और "सपना अभी भी" इसका अपवाद नहीं है।

(ख) उपन्यासकार भारती :-

(१) गुनाहों का देवता ::-

भारतीजी का यह उपन्यास सन् १९४९ में प्रकाशित हुआ। यह भारतीजी का पहला उपन्यास है। "गुनाहों का देवता" रोमांटिक प्रेमकथा है। इसमें भारतीजी ने मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त समस्याओं का विस्तृत एवं मनोरम ढ़ंग से निरूपण किया है। इस उपन्यास की कथा के दो मुख्य पात्र हैं चन्दर और सुधा। चन्दर और सुधा के प्रेम की कथा मुख्य कथा है। इसके बारे में कैलाश जोशी कहते हैं - "उपन्यास में प्रेम के उदात्त रूप का चित्रण है। इस कथा से यह सहज ही ध्वनित होता है कि प्रेम वही सार्थक है जिससे व्यक्ति के विकास को सहायता मिले।"[८] सहायक कथा में पम्मी, बिनती, गेसू को पारस्पारिक सम्बन्धों की समस्याओं का कथन किया है। चन्दर का तीनो नारी पात्रों से सम्बन्ध रहा है। उपन्यास का कथानक तीन खण्ड़ों में विभाजित है और अंत में एक छोटा-सा उपसंहार है। उपन्यास का अंत सुधा की मृत्यु से दिखाया है और उपसंहार में चन्दर द्वारा बिनती को अपनाये जाने की कथा का उल्लेख किया है।

" "गुनाहों का देवता" नाम की सार्थकता प्रतिपादित करने के लिए लेखक ने अपने पात्रों के मुख से चंदर के लिए "देवता" शब्द का प्रयोग करवाया है।"[९]

(२) सूरज का सातवाँ घोडा :-

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास सन् १९५२ में प्रकाशित हुआ है। यह धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास है। यह हिंदी कथा साहित्य में नया प्रयोग है - इसी कारण इसका स्वरूप बाकी उपन्यासों से भिन्न है। यह एक शिल्पप्रधान उपन्यास है। मध्यवर्गीय जीवन के विविध यथार्थ पहलुओं को चित्रित करने के लिए भारतीजी ने प्रेम कहानियों का सहारा लिया है। उपन्यास की कथा का आरंभ "पहली दोपहर" की कहानी से शुरू होता

है और "सातवी दोपहार" तक यह कथा चलती रहती है। इस उपन्यास का नायक माणिक मुल्ला है जो असफल प्रेमी के रूप में दिखायी देता है। इसमें माणिक मुल्ला की प्रेमिका के रूप में जमुना, लिली, सत्ती है। लेकिन माणिक तीनों में से किसी एक के प्रेम को भी पा नहीं सकता है। "सातवी दोपहर" की जो कहानी है वहीं "सूरज का सातवाँ घोड़ा" है। अर्थात वह जो सपने भेजता है। इस में सात घोड़ों का तात्पर्य स्पष्ट किया है। यह कहानी सात दिन चलने का मुख्य कारण सूरज के सात ही घोड़े हैं। उस सातवें घोड़े की ओर लेखक भविष्य की आशा से देखता हैं। "सूरज का सातवाँ घोड़ा" उपन्यास के बारे में अज्ञेयजी कहते हैं - "सूरज का सातवा घोड़ा" एक कहानी में अनेक कहानियाँ नहीं, अनेक कहानियों में एक कहानी है। वह एक पूरे समाज का चित्र आलोचना है, और जैसे उस समाज की अनन्त शक्तियाँ परस्पर-सम्बद्ध, परस्पर आश्रित और परस्पर सम्भूत हैं। वैसे ही उनकी कहानियाँ भी। "[१०]

(३) <u>ग्यारह सपनों का देश</u> :-

"ग्यारह सपनों का देश" यह भारतीजी का तीसरा एवं अंतिम उपन्यास है। यह उपन्यास १९६० में प्रकाशित हुआ। यह भारतीजी की स्वतंत्र कृति नहीं है। इस उपन्यास में अलग अलग अध्याय हैं; कूल मिलाकर ग्यारह अध्याय हैं; जिसमें भारती जी के दो अध्याय हैं - "इसके लेखक इसप्रकार हैं - धर्मवीर भारती, उदयशंकर भट्ट, रांघेय राघव, अमृतलाल नागर, इलाचन्द्र जोशी, राजेंद्र यादव, मुद्राराक्षस, लक्ष्मीचन्द्र जैन, प्रभाकर माचवे और कृष्णा सोबती।" [११] यह कृति अनेक लेखकोंद्वारा निर्मित है, इसलिए इसका समावेश इस शोध कार्य में नहीं किया गया है।

(ग) कहानीकार भारती :-

(१) <u>चांद और टूटे हुए लोग"</u> :-

भारती का "चाँद और टूटे हुए लोग" कहानीसंग्रह सन् १९५५ में प्रकाशित हुआ है। इस कहानिसंग्रह में २५ कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों का विभाजन तीन खण्डों में किया है -

चाँद और टूटे हुए लोग (प्रथम खण्ड)

भुखा ईश्वर (द्वितीय खण्ड)

कलंकित उपासना (तृतीय खण्ड)

प्रथम खण्ड :- "चाँद और टूटे हुए लोग" शीर्षक खण्ड में "हरिनाकुस और उसका बेटा", "कुल्टा", "मरीज नम्बर सात", "धुवाँ", "युवराज", "अगला अवतार" एवं "चाँद और टूटे हुए लोग" आदि कहानियाँ समाविष्ट हैं।

द्वितीय खण्ड :- "भुखा ईश्वर" नामक इस खण्ड में "भुखा ईश्वर", "मुर्दों का गाँव", "एक बच्ची की कीमत", "आदमी का गोश्त", "बीमारियाँ", "कफन चोर", "एक पत्र", "हिंदु या मुसलमान", "कमल और मुर्दे" आदि कहानियाँ हैं।

तृतीय खण्ड :- "कलंकित उपासना" नामक इस तीसरे खण्ड में "पूजा", "स्वप्नश्री" और "श्रीरेखा", "शिंजिनी", "कला एक मृत्युचिन्ह", "नारी और निर्वाण", "तारा और किरण", "कुबेर", "मंजिल" तथा "कलंकित उपासना" ये नौ कहानियाँ संकलित हैं।

बंद गलि का आखरी मकान :

यह कहानीसंग्रह भारती का अंतिम कहानीसंग्रह है। यह १९६९ में प्रकाशित हुआ है। इस कहानीसंग्रह में सन् १९५० से सन् १९६९ तक की चार कहानियाँ संकलित की गयी है। इस कहानीसंग्रह की प्रथम कहानी "गुल की बन्नों" १९५५ में लिखी गयी है। इसमें "गुल की बन्नो", "सावित्री नम्बर दो", "यह मेरे लिए", "बन्द गली का आखिरी मकान" ये कहानियाँ संग्रहित हैं।

इलाहाबादी गली - मुहल्लों के यथार्थ माहौल का इन सभी कहानियों में अंकन हुआ है। इनमें मध्यवर्गीय गलियों के जीवन की - मानसिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियाँ दिखायी देती हैं।

सामान्यतः इन कहानियों में निम्न एवं मध्यवर्ग के व्यक्तियों का चित्रण हुआ है।

(घ) एकांकीकार भारती :-

डा.धर्मवीर भारती के "नदी प्यासी थी" एकांकी में पाँच एकांकियों का संकलन है। यह एकांकी संग्रह १९५४ में प्रकाशित हुआ है। इनमें से चार एकांकी रंगमंचीय एकांकी हैं तथा एक रेड़िओ के लिए लिखी गयी है। जो निम्नलिखित हैं -

१) नदी प्यासी थी।

२) नीली झील।

३) आवाज का नीलाम।

४) संगमरमर की एक रात।

५) सृष्टि का आखरी आदमी।

भारती के इन एकांकी में आस्था और आशावादिता साहित्य के महत्त्वपूर्ण तत्त्व रहे हैं।

(च) नाटककार भारती :-

अंधायुग :- यह धर्मवीर भारती की नाटयकृति १९५५ में प्रकाशित हुआी है, जिसे कविता और नाटक दोनों विधाओं की महत्त्वपूर्ण उपलब्धी माना गया है। "अंधायुग" रंगमंचीय नाटक है। "अंधायुग" का कथासुत्र महाभारत के रणांत से उपजी हुआी स्थितियों से सम्बद्ध है। - "किशोरावस्था के काल में उनके मन में युगबोध प्रखर रूप में उभरा। इसी युगबोध की अभिव्यक्ति प्रखरतम् रूप में "अंधायुग" में हुई है।"[१२]

मूलरूप में "अन्धायुग" रेडिओ नाटक के रूप में लिखा गया था, जिसे आगे चलकर भारती ने वर्तमान रूप दे दिया है। "अंधायुग" का उद्‌देश्य, नये मूल्य बोध को प्रेक्षकों के मन में अंकुरित करना है।

(छ) निबंधकार भारती :-

भारतीजी के तीन निबंध संग्रह हैं। इन निबंधों में लेखक की वैचारिकता, संवेदनशीलता और चिंतनशीलता के दर्शन होते हैं।

(१) ठेले पर हिमालय :-

डा.भारतीजी का "ठेले पर हिमालय" निबंधसंग्राह सन् १९५८ ई में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के निबंधों का विभाजन यात्रा-विवरण, डायरी, पत्र, शब्दचित्र, साहित्यिक डायरी, संस्मरण, कैरीकेचर, व्यंग्य रूपक, श्रद्धांजली, आत्मव्यंग्य आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत किया गया है। - "प्रस्तुत यात्रा-विवरण का आधार लेखक ने अपने मित्र उपन्यासकार को बनाया है जो ठेले की बर्फ को देखकर अतीत की सुखद रोमांचक स्मृतियों में आत्मलीन होने तथा अभाव के क्षणों में व्याकुलता की स्थिति को वह भली भाँति समझता है।"[१३]

(२) पश्यन्ती :-

'पश्यन्ती' निबंध संग्रह का प्रकाशन सन् १९६९ ई में हुआ है। इसमें कुल मिलाकर सतरह निबंध संकलित हैं। जिनको "आत्मकथा", "व्यक्तित्व और कृतित्व", "सर्वथा निजी", "पश्यन्ती : इतिहास", "सर्वेक्षण", "युग-बोध", "चिकनी सतहें", "बहते आंदोलन" आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत विभाजित किया है। भारती के "पश्यन्ती" में प्रकाशित निबन्ध सन १९५९ ई. से लेकर सन् १९६७ ई . के बीच के कालखण्ड में लिखे हुए हैं। भारती का संपूर्ण व्यक्तित्व इस एक संग्रह में दृष्टव्य है।

(३) कहनी-अनकहनी :-

"कहनी-अनकहनी" निबंध संग्रह सन् १९७० ई. में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में ४५ छोटे-छोटे निबंध हैं। यह भारतीजी का "ललित निबन्ध संग्रह" है। इन निबंधों में हास्य-व्यंग्य के साथ, विनोद के प्रयोग सम्मिलित हैं। ये निबंध व्यक्तिगत, सामाजिक समस्याओं से लेकर जागतिक समस्याओं तक सम्बन्धित हैं। इसमें भारती का चिंतनशील रूप दिखायी देता है।

(४) शाब्दिता (१९९७) : भारती जी का यह चिंतनपरक निबंधों का संग्रह है। यह उनकी अंतिम कृति है। जो मृत्यु से पहले कुछ दिन प्रकाशित हुअी है।

(ज) अनुवादक भारती :-

भारतीजी की अनुदित कृतियाँ - "आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ" और "देशान्तर" हैं। भारतीजी की अपनी अनुदित कृतियाँ हिन्दी में प्रशंसा पात्र हैं।

(१) आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ :-

इसका प्रकाशन सन् १९५९ में हुआ है। इनमें कुल आठ कहानियाँ हैं। एक अच्छा कलाकार भाषा का ज्ञाता एवं मानवीय अनुभूतियों को प्रत्यक्ष चित्रित करनेवाले के रूप में आस्कर वाईल्ड को मान्यता मिली है। ऐसे आस्कर वाईल्ड की कहानियों को अंशिक रूप ही में क्यों न हो, हिन्दी में लाने के लिए भारती को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

(२) देशांतर :-

"देशांतर" यह भारती का अनुदित काव्यसंग्रह है। इसका प्रकाशन सन १९६० में हुआ है। इसमें "एक सौ इकसठ" विदेशी कवियों की कविताओं का अनुवाद भारतीजी ने किया है।

(झ) रिपोर्ताज :-

"धर्मक्षेत्रे : कुरूक्षेत्रे" के आधारपर भारती ने अपने बांगला देश के युद्ध विषयक रिपोर्ताजों को "मुक्तक्षेत्रे : युद्धक्षेत्रे" के नाम से प्रकाशित किया है। बांगला देश - सम्बन्धी इन रिपोर्ताजों को लिखने के लिए भारती ने एक सच्चे पत्रकार के नाते स्वयं मुक्तक्षेत्र का दौरा किया था - "भारती ने न केवल मुक्त क्षेत्र का दौरा किया अपितु युद्धक्षेत्र में जाकर स्वयं उसका आँखों-देखा हाल अपने इन रिपोर्ताज में उपस्थित किया है।"[१४]

मुक्तक्षेत्रे के इन रिपोर्ताजों में पाकिस्तानी अत्याचारों का उल्लेख आवश्यक माना है। अंग्रेजी दासता के बाद बांगला देश पाकिस्तानी दासता का शिकार बना। युद्धक्षेत्र से सम्बन्धित इन रिपोर्ताजों में युद्ध की मानसिकता का चित्रण जहाँ तहाँ हुआ है। "मुक्तक्षेत्रे : युद्धक्षेत्रे" में नौ रिपोर्ताजों के अतिरिक्त एक साक्षात्कार भी है। भारती ने मुक्तवाहिनी के सेनापति कर्नल उस्मानी का इंटरव्हयू लिया है।

(ट) समीक्षक भारती :-

भारती एक अच्छे आलोचक भी थे। जिनकी कृतियाँ निम्नांकित हैं। -

(१) प्रगतिवाद : एक समीक्षा :-

इसका प्रकाशन सन् १९४९ में हुआ है। इस कृति में मार्क्सवाद पर आधारित भारतीय हिंदी साहित्य के प्रगतिवाद की सीमाओं का निर्देश किया गया है। इस कृति में रूसी साहित्य के प्रति आस्था दिखायी देती है। इसके तेरह अध्याय है। इसमें भारतीय प्रगतिवाद और रूसी प्रगतिवाद की तुलना की है।

(२) मानवमूल्य और साहित्य :-

इसका प्रकाशन सन् १९४९ ई. में हुआ है। यह कृति तीन खण्डों में विभाजित है। भारती की इस कृति की पृष्ठभूमि में मानवतावादी स्थापनाएँ रही हैं, जिनके अनुसार उन्होंने "मानव" एक बुनियादी तत्त्व स्वीकार कर साहित्य में उसी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने का प्रयत्न किया है। इसमें भारती जी "व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को साहित्य की सार्थकता मानते है।" साथ ही इसमें भारतीजी ने मानवमूल्यों को ध्वस्त हो जाने एवं अनेक अन्वेषण की दिशा को स्पष्ट किया है।

(ठ) शोधकर्ता :-

डा.भारती जी का शोधप्रबंध ई.१९५५ में प्रकाशित हुआ है। भारती जी ने डा.धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में "सिद्ध साहित्य" पर पीएच.डी. का शोध-प्रबंध लिखा है, जो प्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं - "यह शोधकार्य आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अज्ञात तथ्यों की जानकारी देते हुए उन्हें समकालीन जीवन के मूल्यों से जोड़ने का भी कार्य संपन्न करता है।"[१५] सिद्ध साहित्य को भारती जी ने छः अध्यायों में विभाजित किया है। इसमें भारतीजी ने सिद्ध साहित्य के संप्रदाय के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

(ड) यात्रावर्णन :-

(१) यात्राचक्र :- यह भारती जी की अधुनातन रचना है। यह यात्रावर्णनों का संग्रह है, जिसमें भारती जी की देश-विदेश की यात्राओं का परिचय मिलता है।

(ढ) पत्रकार भारती :-

डा.भारती एक सफल पत्रकार भी थे। भारती जी ने पत्रकार, सह.संपादक, संपादक के रूप में कार्य किया है।

(१) संगम :- "संगम" साप्ताहिक पत्रिका थी। इसमें भारतीजी ने १९४८ से १९५० तक दो वर्ष सहायक संपादक के रूप में कार्य किया है। इस पत्रिका का प्रकाशन १५ अगस्त १९४७ से प्रारंभ हुआ और वह सन् १९५४ तक प्रकाशित होता रहा। इस पत्रिका के माध्यम से भारती जी ने अपने बहुत से लेख प्रकाशित किए हैं।

(२) निकष :- "निकष" पत्रिका का प्रकाशन सन १९५४ से प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका का संपादन कार्य धर्मवीर भारती और लक्ष्मीकांत वर्मा ने किया है। इस काल में धर्मवीर भारती प्रयाग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्य करते थे।

(३)आलोचना :- इस पत्रिका में धर्मवीर भारती जी ने सहायक संपादक के रूप में कार्य किया है।

(४) धर्मयुग :- भारती ने जब "धर्मयुग" का संपादन कार्य शुरू किया, उसी वक्त ही वे सदा के लिए इलाहाबाद छोड़कर मुंबई आ बसे। सभी पत्रिकाओं में "धर्मयुग" ने विशेष स्थान प्राप्त कर लिया है। धर्मवीर भारती ने "धर्मयुग" के संपादन कार्य का उत्तरदायित्व अंततक सफलतापूर्वक निभाया है।

(५) हिन्दी साहित्य कोश :- इस ग्रंथ के सहयोगी संपादक के रूप में भारतीजी ने कार्य किया है।

(६) अर्पित मेरी भावना :- भगवतीचरण वर्मा के लिए अभिनंदन ग्रंथ "अर्पित मेरी भावना- के सम्पादक के रूप में धर्मवीर भारती जी ने कार्य किया है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर प्रसिद्ध साहित्यकारों में

भारतीजी ने अपना एक अलग स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने हिंदी साहित्य को एक नयी दिशा देने का कार्य किया है। उनके साहित्य की निर्मिती पूर्णतः अपनी अनुभूति पर हुई है। उनके जीवन में जो जो चढ़ाव-उतार आए उनसे उनके साहित्य की निर्मिती हो गयी है।। भारतीजी को लोग बहुमुखी प्रतिभा के रूप में जानते हैं। वे आधुनिक साहित्य के ज्ञाता है।। धर्मवीर भारती पहले सम्पादक हैं, बाद में साहित्यिक। फिर भी साहित्य की कई विधाओं में उन्होंने एक साथ सफलतापूर्वक दौड़ की है।

उनका व्यक्तित्व रोमांटिक था। जो हमें उनकी रचनाएँ "कनुप्रिया" "गुनाहों का देवता" आदि में दिखायी देता है। उनपर पड़े छायावादी प्रभाव को हम उनकी कविताओं में देखते हैं। प्रथम और द्वितीय महायुद्ध भारती जी ने देखे हैं उसके विरूद्ध आवाज उठाने के लिए भारतीजी ने १९४२ के आंदोलन में हिस्सा लिया, इसी के परिणामस्वरूप "अंधायुग" नाटक की निर्मिती हो गयी। भारती जी का ज्यादहतर जीवन दुःखमय है। बचपन में माता-पिता का देहांत, बाद में पहली पत्नी का बीच में ही छोड़ जाना आदि कठिनाईयों का उन्होंने मुकाबला किया , क्योंकि उनमें कुछ सिखने की ललक थी। वह उन्होंने पूरी भी की। "गुनाहों का देवता" में अनुभूति की शक्ति और सहज अभिव्यक्ति हैं, इसलिए यह उपन्यास काफी रोचक और प्रभावपूर्ण है। एक विशेष आयुको मनःस्थिति और जीवन-स्थिति का चित्रण होने से उनके उपन्यास उस आयु और मनःस्थिति के पाठकों के लिए और भी आकर्षक है। यह आयु और मनःस्थिति उपन्यास के नायक चंदर की ही नहीं है, बल्कि उपन्यास में रचयिता धर्मवीर भारतीजी की भी है। वास्तव में चन्दर भारती से बहुत कुछ अभिन्न है। चंदर की कथाद्वारा भारती ने अपनीही आदर्शमयी भावुकता और युवाकालीन जीवनदृष्टि को अभिव्यक्त किया है। जिस जीवन का अंकन उपन्यासों में किया गया है, वह उपन्यासकार का अपना देखा-परखा और भोगा हुआ जीवन है। साथ ही "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास की कथा कहनेवाला व्यक्ति है माणिक मुल्ला, जो इस कथाकृति का प्रमुख पात्र है। कथा सुनानेवाला यह पात्र कथाकार भारती के व्यक्तित्व के काफी निकट है।

धर्मवीर भारती मानवतावादी, समाजवादी, ईमानदार, रोमांटिक, कलासंपन्न साहित्यिक थे। संपूर्ण साहित्य में उन्होंने अपने व्यक्तित्व की एक छाप छोड़ दी है। उन्होंने जो साहित्य लिखा, वह बहुत कम है, लेकिन बहुत मौलिक है।

इस प्रकार धर्मवीर भारतीजी हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार थे, जिनकी रचनाओं में उनका स्पष्ट व्यक्तित्व झलकता है।

संदर्भ ग्रंथ

१. डा.पुष्पा वास्कर : "डा.धर्मवीर भारती : व्यक्तितत्व एवं कृतित्व" (अप्रकाशित शोधग्रांथ), पृ.२

२. डा.धर्मवीर भारती : "पश्यन्ती", पृ.१०

३. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग, पृ.३

४. - वही - : वही, पृ.६

५. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.१४

६. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग", पृ.२

७. वही : वही, पृ.४९

८. कैलाश जोशी : "धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य", पृ.१८

९. डा.हुकुमचंद राजपाल : "धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम", पृ.१३९

१०. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.१०

११. कैलाश जोशी : "धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य", पृ.२५

१२. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग", पृ.५८

१३. डा.हुकुमचंद राजपाल : "धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम", पृ.१७४

१४. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग", पृ.१७३

१५. डा.पुष्पा वास्कर : "डा.धर्मवीर भारती : व्यक्तितत्व एवं कृतित्व" (अप्रकाशित शोधग्रांथ), पृ.३०३

-o-o-o-o-